श्री सांावलियाजी मलदर लनयमां , 1991 (47)

सत्यमेव जयते	**राजस्थान राज-पत्र लवशेषांक**	Regd.No. RJ.2539 **RAJASTHANGAZETTE** Extraordinary
	सावधकार प्रकावशत	Published byAuthority
	अग्रहायण 11, सोमवार, शाके 1913 - लदसम्बर 2, 1991 Agrahayana 11, Monday, Saka 1913- December 2, 1991	

भाग-4 (ग)

उप खण्ड (I)

राज्य सरकार तथा अन्य राज्य-प्रालधकाररयों द्वारा जारी लकये गये

(सामान्य अदेशों, ईप-विवधयों अवद को सवममवित करते हएु) सामान्य काननी वनयम।ू

देवस्थान लवभाग अलधसचनाू जयपरु , लदसम्बर 2, 1991

जी.एस.अर. 41:- **श्री सांावलियाजी मलदर अध्याां देश 1991** (ऄध्यादेश सख्या ं 10, सन ् 1991) की धारा 14, धारा 17, धारा 20 की ईप-धारा (2), धारा 21 की ईप-धारा (4), धारा 22, धारा 28 की ईप-धारा (3) की सपवित धारा 29 द्वारा प्रदत्त शवियों का प्रयोग करते हए राज्य सरकारु , एतदद्वारा्, ईि ऄध्यादेश के प्रयोजनों को कायाावन्ित करने के विए वनमनविवखत वनयम बनाती है, ऄथाात्:-

भाग-1

1. सलिप्त नाम तथा प्रारम्भां :-

1. ये वनयम श्री सािवियाजी मं वदर वनयमं, 1991 कहियेंगे।

2. ये तरन्त प्रभाि से िागु होंगे।ू

2. पररभाषायें:-

(1) आन वनयमों में, जब तक विषय या सन्दभा के विरूद्ध कोइ बात न हो:-

(क) **''अध्यादेश''** से तात्पया **श्री सांवलियाजी मलदर अध्यादेशां , 1991** से ह।ै

(ख) **''बजट''** से तात्पया श्री सािवियाजी मं वदर की प्राविया तथा व्ययों के ऄनं मान के ु विििरण से ह।ै

(ग) **''बेिेन्स शीट''** से तात्पया श्री सािवियाजीं मवदरं के बजट सतं िनु वचत्र (बेिेन्स शीट) से ह।ै

(घ) **''बोडड''** से तात्पया ऄध्यादेश की धारा 5 के ऄन्तगात स्थावपत एिं गवित श्री सािवियाजीं मवदरं बोर्ा से है वजसका कायाािय वचत्तौड़गढ़ वजिे में वस्थत मण्डिया ग्राम में होगा।

(ङ) **''प्रपत्र''** से तात्पया आन वनयमों के साथ िगे प्रपत्रों से ह।ै

(च) **''धारा''** से तात्पया ऄध्यादेश की धारा से ह।ै

(छ) **''वषड''** से तात्पया वदनाकं 1 ऄप्रेि को प्रारमभ ि अगामी वदनाकं 31 माचा को समाि होने िािे वित्तीय िषा से ह।ै

(ज) **''सेवा''** से तात्पया समस्त प्रकार की सेिा जो मवदरं की मवताू के समबन्ध में की जाती है ऄथिा ऄन्य ईसमें स्थावपत ऄन्य पजाू ऄचाना अवद से ह।ै

(झ) **''मलदरां लनलध''** से तात्पया है श्री सािवियाजीं मवदरं बोर्ा द्वारा प्रशावसत सािवियाजीं मवदरं वनवध तथा आसमें समस्त रावशयां, चढ़ािा, भेंट तथा पजाू स्थि के िाभ के

विए वकया गया कोइ भी ऄन्य दान या ऄवभदाय से है तथा आसमें ऐसी रावश जो पजा ू स्थि तथा मवदरं श्री साि्वियाजीं की सेि्ा पजा ू के ऄधीन प्रयोजनों के विए की जाती भी आसमें सवममवित ह।ैं

(ञ) **''बोडड के अलधकारी तथा कमडचारी एव ां सेवकों''** से तात्पया मख्यु कायापाि्क ऄवधकारी के ऄिाि्ा ऐसे वकसी भी ऄवधकारी एि् कमाचारी से है जो बोर्ा द्वारा वनयिु हो ऄथिा बोर्ा से ऄवधकृ त व्यवि द्वारा वनयिु हो, सवममवित ह।ै

(ट) **''मलदरां के आभूषणों''** से तात्पया सोना, चादीं एि् ऄन्य कीमती धातु के अभषणू , रत्नाभषणू तथा ऄन्य ि्स्तअु ंसे है जो मवता ू को धारण कराये जाते हैं ऄथिा पजा ू काया के प्रयोग में ि्ाये जाते ह।ैं

(ि्) **''लनमाडण कायड''** में श्री साि्वियाजीं मवदरं बोर्ा द्वारा प्रशावसत साि्वियां मवदरं पररसर तथा ऄन्य आमारत तथा आमारतों के वनमााण, मरममत, पररितान, पररिद्धान, सिद्धानं ि् नये वनमााण काया तथा मवदरं के कृ वष एि् वसचाइं समबन्धी काया जो मण्र्विया ऄथिा मण्र्विया के बाहर वकये जाते हैं एि् दानदाताओ ं के द्वारा कराये जाने ि्ाि्े वनमााण काया जो बोर्ा ऄथिा बोर्ा के द्वारा ऄवधकृ त ऄवधकारी की सहमवत से कराये जाते हों, अवद आसमें सवममवित ह।ैं

(2) आन वनयमों में प्रयि वकु न्त ऄपररभावषत शब्दों तथा ऄवभव्यवियों में ि्े ही ऄथा होंगे जो ु ऄध्यादेश में क्रमशः ईन्ह े ंसमनदेवशत वकये गये ह।ैं ु

(3) जब तक वक सदभा द्वारा ऄन्यथा ऄपेवित न हों , आन वनयमों के वनिाचन के विये राजस्थान साधारण खण्र् ऄवधवनयम , 1955

(राजस्थान ऄवधवनयम 8, सन ् 1955) ि ैसे ही ि ाग होगा ू
जैसे ि ह वकसी राजस्थान ऄवधवनयम के वनिाचन पर ि ाग होता
ह।ै ू